परिसर प्रतिबिंब

कुलपति की कलम से...

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व एक वैश्विक त्रासदी से साक्षात्कार कर रहा है। कोरोना रूपी महामारी ने विश्व भर में सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों को नए स्वरूप में परिभाषित करने की आवश्यकता को जन्म दिया है। इस महामारी के फलस्वरूप संपूर्ण शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक व्यवस्थाओं के स्वरूप में भी आमूलचूल परिवर्तन अपेक्षित और दृष्टिगत हुए हैं। परंतु इसका एक सकारात्मक पक्ष यह है कि इस त्रासदी की अवधि में संपूर्ण विश्व भारत के मानवीय एवं सामाजिक - सांस्कृतिक मूल्यों को सहज भाव से अंगीकृत करने हेतु तत्पर दिखाई दे रहा है।

आपदाएं और विपदाएं मानव जीवन एवं समाज जीवन से प्रारंभिक काल से ही सम्बद्ध रही हैं। परंतु यह भी मानव सभ्यता के स्वर्णिम इतिहास का ध्रुव सत्य है कि प्रत्येक त्रासद काल के बाद मानव सभ्यता और अधिक सबल, सुदृढ़, सशक्त, आत्मनिर्भर और समृद्धिशाली बनी है। हमने प्रगति के नित्य नवीन सोपान गढ़े हैं और आज एक गौरवशाली अतीत की गाथा के साथ अपने समृद्ध वर्तमान के सृजन को तत्पर हैं। कोरोना त्रासदी से उत्पन्न परिस्थितियों से सामंजस्य बिठाते हुए हम समाज जीवन और शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रतिमान स्थापित करने को भी अग्रसर हैं। त्रासदी को भी सकारात्मक बनाना भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता है और हमने इस काल में अन्याय डिजिटल उपादनों की सहायता से शिक्षण के क्षेत्र में नवाचारों को अंगीकार किया है। अपने शिक्षार्थियों के अकादमिक उन्नयन के लिए महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने ई- विमर्श, ई- ज्ञान सीरीज, वेब संगोष्ठी, ई- वर्कशॉप, फेसबुक लाइव, ई- मीटिंग और पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन आदि के माध्यम से शिक्षण गतिविधियों को अधिक निष्ठा से संचालित किया और डिजिटल शिक्षा को एक नवीन दिशा दी। विषाद को आनंद में परिवर्तित करना एवं नकारात्मकता से सकारात्मक निकाल लेना ही हमारी संस्कृति की पहचान है और हम सभी एक बेहतर कल को लेकर आश्वस्त भी हैं और आशान्वित भी....

प्रो. संजीव कुमार शर्मा

भारतीय उच्च शिक्षा में महिलाएँ : चुनौतीयाँ एवं अवसर विषय पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी आयोजित

उच्च शिक्षा में महिलाओं का अनुपात बढ़ा:- प्रो. संजीव कुमार शर्मा

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार एवं ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय उच्च शिक्षा में महिलाएँ: चुनौतियाँ एवं अवसर' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन बुधवार, १७ जून को किया गया।

राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा ने सभी वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह वेब संगोष्ठी एक बहुत बड़े स्तर का शैक्षणिक अनुष्ठान है जिसमें विदेशों से भी कई प्रतिभागी सहभागिता कर रहे हैं। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में सांख्यिकीय दृष्टि से उच्च शिक्षा में महिलाओं का अनुपात बढ़ा है। यह उत्साहवर्धक संकेत है। आज के इस संगोष्ठी के चारों अनुभवी वक्ताओं के विचार को सुनने के बाद उस पर विमर्श एवं चिंतन करके महिलाओं के लिए एक नए अवसर एवं पथ का सृजन हो सकेगा। संगोष्ठी का विषय बेहद महत्वपूर्ण व समकालीन है।

मुख्य अतिथि के तौर पर भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली की महासचिव डॉ. पंकज मित्तल ने कही कि आज हर क्षेत्र में महिलाएं आगे आई हैं। महिलाओं के प्रति मानसिक अवधारणाओं को भी बदलने की आवश्यकता है, जब हम बड़े- बड़े वैज्ञानिक, डॉक्टर के बारे में सोचते हैंतो हमारे मस्तिष्क में पुरुष की छवि बनती है और जब हम नर्स या रिसेप्शनिस्ट के बारे में सोचते हैं तो महिला की छवि बनती है। हमारे पुरुष प्रधान समाज में अब परिवर्तन हो रहा है, लेकिन आज भी ग्रामीण समाज में महिलाओं के उच्च शिक्षा एवं अवसर के बारे में पुरुष निर्णय लेते हैं। इसपर भी हमें विचार करना चाहिए।

परिवार प्रबंध करना भी एक बहुत बड़ी चुनौती है जिसे महिलाएं आसानी से करती हैं। अब बहुत सारे संस्थानों में छोटे-छोटे कौशल विकास वाले प्रशिक्षण कोर्स भी चलाए जा रहे हैं जिससे महिलाएं इस कोर्स को करके आत्मनिर्भर हो रही हैं। महिला कॉलेज एवं महिला विश्वविद्यालय की सचमुच जरूरत है। अंत में डॉ. पंकज मित्तल ने महिलाओं के लिए प्रेरणादायी बातें कही कि दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं, पहला- जो वक्त के सांचे में ढल गए, दूसरा- जो वक्त के सांचे को बदल गए। यह आपको निर्णय लेना है कि आपको क्या करना है।

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के तौर पर ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, ओड़िशा के कुलपति प्रो. आई रामब्रह्मम ने इस वेब संगोष्ठी के प्रति खुशी जाहिर करते हुए कहा कि महिला डिसीजन मेकर होती है। महिलाएं एक अच्छी प्रशासक, प्रबंधक एवं सलाहकार भी होती हैं। महिलाओं में समाज एवं देश को नेतृत्व देने की भी क्षमता होती है। उन्होंने कहा कि इस कोरोनाकाल में भी बहुत सारी महिलाएं समाज के साथ खड़ी दिखी। वे कोरोना योद्धा के रूप में काम की। उच्च शिक्षा में महिलाओं को और आगे आना चाहिए इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन को भी विचार करने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के तौर पर नालंदा विश्वविद्यालय, नालंदा, बिहार की कुलपति प्रो. सुनैना सिंह ने कही कि वेदों में भी स्त्रियों के शिक्षा-दीक्षा की बातें की गई है। प्राचीन समय में बालिकाओं को ललित कला की शिक्षा दी जाती थी। यजुर्वेद एवं ऋग्वेद में भी नारी को शिक्षा का अधिकार दिया गया है। शिक्षा से महिलाओं को वंचित रखना उसपर अत्याचार करने जैसा है। भारत की महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ी है। आज भी महिलाओं के सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं, इन चुनौतियों को अवसर में बदलने की आवश्यकता है। महिलाएं हरेक परिस्थितियों का सामना कर सकती है एवं हर क्षेत्र में कुशल प्रतिनिधित्व कर सकती है। संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के तौर पर एस.एन.डी.टी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र की कुलपति प्रो. शशिकला वनजारी ने शिक्षा के प्रति स्वामी विवेकानंद के विचारों पर प्रकाश डालते हुए कही कि व्यक्ति का विकास शिक्षा से है। जो व्यक्ति प्रकृति से लड़ सकता है वह उसमें चैतन्य होता है। शिक्षा ऐसी हो जिससे चरित्र निर्माण हो सकें और मस्तिष्क का विकास हो सकें। भारत के शिक्षा व्यवस्था में महिलाओं को प्रथम प्रधानता देना चाहिए तब ही राष्ट्र का विकास होगा। महिलाओं की पवित्रता एवं गौरव शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। उच्च शिक्षा के प्रति महिलाओं में जागरूकता भी बढ़ी है, यह सकारात्मक पहल है।

समाज और राष्ट्र उन्नति में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण :- डॉ. पंकज मित्तल

महिलाओं के विकास में पुरुषों का भी योगदान रहा है। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के शोध और विकास संकाय के अधिष्ठाता एवं इस वेब संगोष्ठी के संयोजक प्रो. राजीव कुमार ने बताया कि इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी में ८ हजार से अधिक प्रतिभागियों ने रजिस्ट्रेशन किया एवं देश के विभिन्न प्रांतों से एक हजार से अधिक लोगों ने जूम एप के माध्यम से इस कार्यक्रम में सहभागिता किया। साथ ही विदेशों से भी कई प्रतिभागी जुड़े थे। इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से पचास हजार लोगों तक पहुंच बनाने का लक्ष्य था जिसमें हम सफल रहें। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रो. शहाना मजूमदार राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी की सह संयोजक थी। संचालन महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रबंधन विज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सपना सुगंधा ने किया। अतिथियों का परिचय डॉ. प्रीति वाजपेयी, डॉ. सपना आदि ने दिया। धन्यवाद ज्ञापन राजनीति विज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ सरिता तिवारी ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में प्रो. अरुण कुमार भगत, प्रो. आनंद प्रकाश, प्रो. पवनेश कुमार सहित महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं उड़ीसा केंद्रीय विश्वविद्यालय के सभी संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, शोधार्थी एवं विद्यार्थी सक्रिय रूप से जुड़े थे। तकनीकी गतिविधियों का संचालन व संयोजन महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय की पीआरओ शेफालिका मिश्रा एवं सिस्टम एनालिस्ट दीपक दिनकर ने किया।

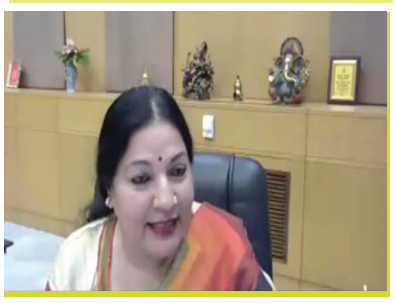

MGCU During Covid- 19 Lockdown

During lockdown caused by the COVID-19 pandemic, the MGCU bolstered the academic enrichment of the student with innovative modes of teaching and learning well a head of other institutions. A brief sketch of these initiatives (from 24.03.2020 to 12.06.2020) would be illustrating

993	Power Point Presentation	07	E- Gyan Series
23	Facebook Live Session	30	Webinars
40	E- Vimarsh Lectures	14	Special Lectures
07	Official Meetings	03	Workshops/FDPs

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

कोरोनाकाल में शिक्षा की अवधारणा में महत्वपूर्ण परिवर्तन : प्रो. अग्निहोत्री

कोरोनाकाल में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान विषय पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी आयोजित

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी के मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा कोरोनाकाल में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान. विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन शनिवार, ६ जून को किया गया। राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय के माध्यम अध्ययन विभाग का एक वर्ष भी पूर्ण नहीं हुआ लेकिन इस अल्पावधि में अनेक कार्यक्रम, संगोष्ठी, कार्यशाला, से. मिनार करते हुए इस कोरोनाक. ाल में भी लगातार कार्यक्रम का आयोजन करना, विश्वविद्यालय के लिए हर्ष की बात है। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा के सामने इंटरनेट कनेक्टिविटी भी एक चुनौती है। इस समस्या पर केंद्र सरकार और राज्य सरकार को भी आगे आने की जरूरत है। कोरोनाकाल में विकास का नया भारतीय प्रतिमान उभरकर सामने आया है जो इसका सकारात्मक पक्ष है। यह समय हमें सुसज्जित करने और बढ़लने का अवसर दिया है। इससे हमारी प्राथमिक. ताएं बढ़लेगी और आवश्यकताएं भी बढ़लेगी। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगि. की और शिक्षा का मिश्रण शिक्षक का विकल्प नहीं है। शिक्षक को सिर्फ शिक्षा ही नहीं देना होता बल्कि चरित्र, आचरण, व्यवहार भी देना होता है।

वेब संगोष्ठी में विषय प्रवर्तन कर रहे मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता प्रो. अरुण कुमार भगत ने सभी वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह एक प्रकार का विशाल शैक्षणिक अनुष्ठान है जिसमें हज. ारों प्रतिभागी जुड़े हैं एवं कई विद्व ान वक्ताओं से मंच सजा है। आज के इस विचार मंथन से ज्ञान रूपी अमृत प्राप्त होगा ऐसी मुझे आशा है। प्रो. भगत ने कहा कि कोरोना मानवता के समक्ष बहुत बड़ी विपदा है। भारत जैसे विशाल देश में शिक्षा की प्रासंगिकता महत्वपूर्ण है। कोरोनाकाल में शिक्षा की गुणवत्ता बरकरार रहे इसके लिए आज का यह वेब संगोष्ठी महत्वपूर्ण है। शिक्षा केवल संज्ञानात्मक कौशल प्राप्त करने का माध्यम नहीं है।यह एक जीवन मूल्य और जीवन शैली है। शिक्षा ज्ञान का उत्सव है। भारत की शिक्षा ऐसी हो जो विकासात्मक, न्यायसंगत एवं सकारात्मक सोच वाला नागरिक पैदा कर सके।

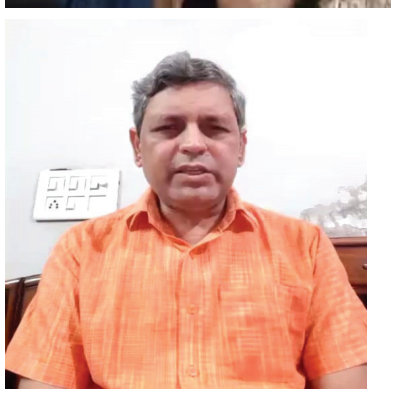
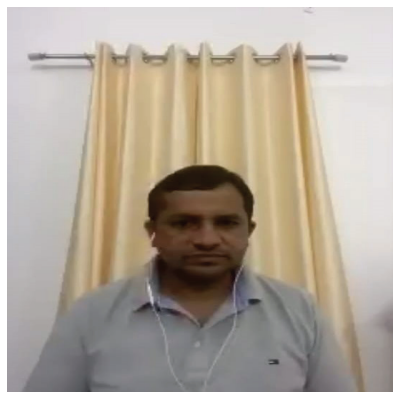

विशिष्ट अतिथि हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के कुलपति प्रोफेसर कुलदीपचंद अग्निहोत्री ने इस संगोष्ठी को आयोजित करने वाले महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग का नाम "मीडिया अध्ययन" रखने पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि वास्तव में मीडिया को अध्ययन करने की जरूरत है। उन्होंने इस कोरोनाकाल में छोटे बच्चों के शिक्षा पर अपने विचार रखते हुए कहा कि यह अच्छी बात है कि इस कोरोनाकाल में छोटे बच्चे घर में ही रहकर अपने परिवार के साथ सुरक्षित रूप से पढ़ाई कर रहे हैं। क्योंकि इन छोटे बच्चों को कम उम्र में ही पढ़ाई के नाम पर घर से बाहर भेज दिया जाता है। आगे उन्होंने कहा कि इस कोरोनाकाल में यह बात पता चला कि शरीर के अंदर की मजबूती को बनाए रखना और स्वस्थ रहना यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। कोरोना चीन से आया यह बहस का विषय है, लेकिन पश्चिम से आए विकास के मॉडल पर इस कोरोना के कारण प्रश्न चिन्ह लग गया है। आज शिक्षा का मतलब सूचना का भंडार हो गया है। लेकिन वास्तव में शिक्षा आपके व्यवहार, आचार, चरित्र और मानवीय संवेदना का चीज है। श्रमिकों में पैदल चलने का साहस भारतीय समाज का सकारात्मक रूप है। यह समाज का एकात्म स्वरूप है। कोरोनाकाल में शिक्षा की अवधारणा में परिवर्तन हुआ है। प्रोफेसर अग्निहोत्री ने संवेग. ात्मक ढंग से भारतीय शिक्षा के पक्ष पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों के सामने छात्रों का परीक्षा करवाना, कक्षाएं शुरू करवाना एवं अन्य शैक्षणिक कार्य शुरू करना एक चुनौती है जो अल्पकालीन चुनौती है। लेकिन जो सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक पक्ष है वह यह है कि भारतीय समाज ज्यादा ताकतवर होकर निकलेगा। भारतीय मूल की अवधारणा बदल जाएगी जो प्रकृति के नजदीक होगी।

हिमाचल प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, हमीरपुर के कुलपति प्रोफेसर एस. पी. बंसल ने कहा कि भारत में इस समय को अवसर में बदलने का वक्त है। इस कोरोनाकाल के बाद वैश्वीकरण की परिभाषा बदल जाएगी। उन्होंने इस संकटकाल में चीन की राजनीति पर भी सवाल उठाए और कहा कि चीन को विकासशील देशों के सूची में नहीं बल्कि विकसित देशों के सूची में होना चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे मानवता का समग्र विकास हो सके। शिक्षा का अर्थ है कि मैं से हम की ओर और फिर हम से परिवार, समाज और राष्ट्र के बारे में सोचना। संस्कृत के बगैर संस्कृति की कल्पना नहीं किया जा सकती। उन्होंने सुझाव देते हुए कहा कि आने वाले समय में ऑनलाइन एजुकेशन भी एक परंपरा होनी चाहिए। विश्वविद्यालय स्तर पर छोटे-छोटे ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी शुरू होने चाहिए ताकि कौशल विकास हो सके। भारत में शिक्षा का विस्तार हो गया है, लेकिन अब शिक्षा के विकास की बात करना होगा। भारत में हैप्पीनेस इंडेक्स को भी बढ़ाना होगा। आधुनिक शिक्षा के साथ परंपरागत शिक्षा को भी साथ लेकर चलना होगा साथ ही पाठ्यक्रमों में ऑनलाइन एजुकेशन भी शामिल हो।

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची के कुलपति प्रोफेसर नंद कुमार यादव इंदु ने कहा कि उच्च शिक्षा केवल ज्ञान देने की जगह नहीं बल्कि ज्ञान क्रिएशन की जगह हो। ज्ञान का योगदान विकास में हो। रोजगार पाने के साथ रोजगार बनाने की भी जरूरत है। इस कोरोनाकाल में एक रास्ता बनाया गया कि ऑनलाइन माध्यम से भी हर चीज संभव है। लेकिन शिक्षक के व्यक्तित्व और आचरण से जो शिक्षा मिलती है वह ऑनलाइन माध्यम में संभव नहीं है। आगे उन्होंने कहा कि जो छात्र तकनीकी रूप से सक्षम नहीं है उन तक शिक्षा देना भी चुनौती है। ऑनलाइन एजुकेशन का एक नया मॉडल सामने आया है। इस कोरोना. काल में रिसर्च वर्क को बहुत बड़ा धक्का लगा है क्योंकि रिसर्च व्यवहारिक चीज है इस पर भी चिंता करने की जरूरत है। हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखंड की हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर मंजुला राणा ने कहा कि इस विपदा के समय हम सभी को उच्च शिक्षा को आगे भी बढ़ाना है और कोरोना से भी लड़ना है। इस संकटकाल में सबसे बड़ी समस्या है कि दुर्गम स्थानों पर जो छात्र हैं उन तक पहुंच बनाना औरशिक्षा का प्रसार करना। भारतीय परंपराओं की रक्षा करते हुए छात्रों तक तकनीक का प्रयोग करते हुए शिक्षा को पहुंचाना एक चुनौती है। इस समय शिक्षक एक योद्धा की तरह है। समय के अनुसार ऑनला. इन शिक्षण देना एक शिक्षक का सामाजिक दायित्व है। इस समय बहुत सारे छात्र अवसाद में है, ऐसे सन्नाटे को तोड़ने के लिए छात्र को केंद्र में रखकर सकारात्मक पि. रवेश बनाना होगा। जब मानसिक स्थिति से छात्र स्वस्थ होगा तब ही विपदा का सामना कर सकता है। शिक्षक को सबल होना भी अनिवार्य है ताकि वे तकनीक से जुड़कर छात्रों के कौशल का विक. ास कर सके। राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का संचालन कार्यक्रम संयोजक मी. डिया अध्ययन विभाग के एसो. सिएट प्रोफेसर डॉक्टर प्रशांत कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी के सह-संयोजक मीडिया अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर परमात्मा कुमार मिश्र ने किया। संगोष्ठी के सह संयोजक मीडिया अध्ययन विभाग के असिस. टेंट प्रोफेसर डॉ साकेत रमण थे। संगोष्ठी में पूरे देश के विभिन्न प्रांतों से लगभग १५०० से अधिक पंजीकृत प्रतिभागी जुड़े हुए थे। साथ ही वि. भन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लगभग १९ हजार लोगों ने कार्यक्रम को देखा। यह वेब संगोष्ठी जूम ऐप के माध्यम से संचालित हुई। साथ ही विश्वविद्यालय के विभि. न्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी सीधा प्रसारण किया गया। इस संगोष्ठी का प्रसारण अन्य विश्वविद्यालयों के फेसबुक पेज सहित विभिन्न शैक्षणिक संगठनों के सोशल मीडिया पर भी किया गया। संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के शोध एवं विकास संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजीव कुमार, मी. डिया अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अंजनी कुमार झा, असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ सुनील दीपक घोडके, डॉ उमा यादव ,पीआरओ शेफालिका मिश्रा एवं सिस्टम एनालिस्ट दीपक दिनकर सहित विभिन्न विभागों के प्राध्यापक, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित रहें।

मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं न तु गच्छति ।
अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम् ।।

संकट से बचना है तो भारतीय परंपराओं का अनुकरण करना होगा – पद्मश्री अशोक भगत

केविवि में 'आत्मनिर्भर भारत: अवसर एवं चुनौतियाँ' विषय पर वेबिनार आयोजित

गांधी जी ने कहा था कि गांव के लोग गांव में ही रहें, स्थानीय कार्यों में संलग्न हों तो हम लोग विकास कर लेगें। लेकिन देश में औद्योगिकरण शुरु हुआ। उद्योगों के अमानवीय व्यवहार से लोग आज गांवों की ओर लौट रहे हैं। जो लोग लौट रहे हैं बहुत ही दयनीय ज़िंदगी जी रहे थे। इंसानों ने लालचवश प्रकृति का दोहन किया-शोषण किया तो प्रकृति ने भी बदला लिया और औकात बता दिया। हमें पुन: अपने मूल्यों की ओर लौटने की आवश्यकता है। तभी हम आत्मनिर्भर हो सकते हैं। देश के प्रधानमंत्री इसे महसूस कर रहे हैं और आत्मनिर्भर भारत के लिए कदम बढ़ाया है। लेकिन जो तंत्र है वह समर्पण के साथ सहयोग करे तो ही भारत आत्मनिर्भर होगा। ये बातें विकास भारती, झारखंड के सचिव पद्मश्री अशोक भगत ने महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आत्मनिर्भर भारत: अवसर एवं चुनौतियाँ' विषय पर आयोजित वेबिनार में बतौर मुख्य अतिथि कही। विशिष्ट अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. टी.एन.सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि आज हम सभी लोग एक सूक्ष्म जीव के कारण लॉकडाउन हो गये हैं। दुनिया के बड़े-बड़े देश जो अपनी चौधराहट दिखाते थे, उन लोगों ने इसके आगे घुटने टेक दिये हैं। हम भारत के लोगों को भी अनेक तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है लेकिन भारत के लोगों के इरादे बहुत बड़े हैं। हम सभी भविष्य के भारत की चर्चा कर रहे हैं। आज इतनी बड़ी संख्या में जो लोग वापस घर आ रहे हैं। वे एक नये तरह की अनुभूति कर रहे हैं। स्वालम्बन के लिए भारतीय चिंतन के अनुसार हमारे पास जो है उस पर स्वाभिमान होना चाहिए। उसका सकारात्मक ढंग से उपयोग करना चाहिए।आज पूरा विश्व भारत की तरफ देख रहा है।

कोरोना को लेकर जो थोड़ी सी उम्मीद दिख रही है वह भारत से है। हमारे हर्बल उत्पादों में, आयुर्वेद में बहुत क्षमता है। फार्मा सेक्टर में संभावना है। भारत समेत पूरे विश्व के आईटी सेक्टर के संचालन में भारतीयों का बहुत योगदान है। इसका केंद्र भारत बने तो अपार संभावनाएं हैं। भारत दुनिया के लोगों को हाथ जोड़कर अभिवादन करना सीखा रहा है। दुनिया को यही संदेश है कि संकट से बचना है तो भारतीय परंपराओं का अनुकरण करें। बाहर से घर आने पर हाथ-पैर धोने, चप्पल बाहर उतारने और कपड़े साफ करने जैसे काम आज संकट पड़ने पर किया जा रहा है वह काम भारत में पहले से होता आ रहा है। आज उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए हम आगे बढ़ सकते हैं।

वेबिनार के मुख्य वक्ता, आईआईएम लखनऊ के प्रो.धर्मेंद्र सिंह रेंगर ने कहा कि भारत की आत्मा गांवों में रहती है। गांव का युवक आत्मनिर्भर होगा तो भारत आत्मनिर्भर होगा। जितनी बड़ी महामारी होती है बचाव तंत्र भी उतना ही मजबूत होना चाहिए। भारत में अर्ली वार्निंग सिस्टम स्थापित करना होगा और लोगों को इस पर विश्वास भी करना सीखाना होगा। आने वाले समय में क्लाइमेट चेंज के कारण वर्तमान संकट से भी बड़ी महामारी हो सकती है।

इससे बचने के लिए हमें डिजिटल टेक्नॉलॉजी को मजबूत करना होगा। हम आत्मनिर्भर भारत की चर्चा कर रहे हैं। गांव का आदमी तभी आत्म निर्भर होगा जब उस पर भी कोई निर्भर हो जाए। गांव का आदमी अपने उद्यम व सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर इतना सशक्त हो जाए कि बाजार उस पर निर्भर हो जाए। इस विषय पर ग्रामीण क्षेत्रों में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों व एनजीओ के लोगो को जाकर चर्चा करनी चाहिए और रास्ता निकालना चाहिए। विवि के कुलपति प्रो.संजीव कुमार शर्मा ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि वक्ताओं ने केवल सैद्धांतिक विषयों पर प्रकाश नहीं डाला बल्कि व्यवहारिक दृष्टि भी सामने रखी। प्रो.पवनेश कुमार व उनकी टीम की प्रशंसा करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरु की गयी योजना पर इतनी सार्थक चर्चा कराने के लिए आभार जताया। वेबिनार के संयोजक व प्रबंधन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. पवनेश कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि तीनों ही वक्ता अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं। इन्होंने इतना सारगर्भित व सार्थक व्याख्यान दिया कि सहभागियो द्वारा उठाये गये सवालों के जवाब उसमें निहित है। प्रबंधन विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ.अल्का लल्हाल ने वेबिनार का संचालन किया जबकि सहायक प्रोफेसर डॉ.स्वाति कुमारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर केविवि की डॉ.सपना सुगंधा, प्रो. विकास पारीक, डॉ. दिनेश व्यास, कमलेश कुमार समेत मारवनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के डॉ.आदित्य मिश्रा समेत केविवि व देश भर के अन्य विश्वविद्यालयों से बड़ी संख्या में शिक्षक व विद्यार्थियों ने ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज कराई।

चीन के लिए भारत की सुरक्षा रणनीति: एक परिप्रेक्ष्य पर विशिष्ट व्याख्यान

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी (बिहार) के राजनीति विज्ञान विभाग के तत्वाधान में एक विशिष्ट व्याख्यान (चीन के लिए भारत की सुरक्षा रणनीति: एक परिप्रेक्ष्य) का आयोजन ऑनलाइन (गूगल मीट) के माध्यम से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो संजीव कुमार शर्मा, माननीय कुलपति, महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार ने की।

वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में ब्रिगेडियर (सेवानिवृत) अमेरिका स्थित राष्ट्रीय सुरक्षा विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त और भारतीय सेना के स्ट्राइक कोर के कमान्डर रहे विवेक लाल ने कहा कि १४ देशों से घिरा हुआ चीन हमेशा भारतीय सीमा का अतिक्रमण करता रहता है। मंगोलिया, रूस, जापान, वियतनाम आदि सभी देश चीन से सशंकित हैं। ब्रिगेडियर लाल ने भारत- चीन संबंधों के ऐतिहासिक, भौगोलिक, सैन्य, कूटनीतिक, एवं सामरिक पहलुओं से भी श्रोताओं को अवगत कराया और भारत चीन संबंधों के विभिन्न आयामों तथा आजादी के बाद के दशकों में दोनों देशों के संबंधों में आये उतार-चढ़ाव पर चर्चा की। १९६२ के युद्ध और उसके परिणामों के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर बात करते हुए श्री लाल ने कहा कि भारत उस युद्ध से काफी दूर आ चुका है और उस समय की तुलना में हम आज चीन के समक्ष ज्यादा सशक्त हैं। उन्होंने इसका उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे १९६७ में जब भारत और चीन के बीच आखिरी बार गोलीबारी हुई थी, तो चीन को ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा था और चीन को भारत के दबाव में पीछे हटना पड़ा था। ब्रिगेडियर लाल ने पिछले वर्ष हुए डोकलाम विवाद का उदाहरण पेश करते हुए कहा कि भारत लगातार सीमा पर चीन के आँख में आँख डालता रहा है अपनी हितों की रक्षा करता रहा है। चीन की बढ़ती ताकत और सीमा पर बढता हुआ अतिक्रमण एवं कुछ मामलों जैसे लड़ाकू विमान, परमाणु - पनडुब्बी आदि में चीन की भारत के ऊपर बढ़त को लेकर भी चिंता जताई। साथ ही उन्होंने कहा कि चीन की बढ़ी अर्थव्यवस्था, उसका विशाल विदेशी मुद्रा-भंडार उसे भारत के पड़ोसी राष्ट्रों में भारतीय हित के विपरीत हस्तक्षेप करने की स्वतंत्रता देते हैं। उन्होंने कहा कि अगर भारत अपने सामरिक हितों की रक्षा करना चाहता है तो भारत को कई मोर्चों - कूटनीति, सैन्य नीति, अर्थ नीति एवं सूचना तंत्र पर एक साथ कार्य करना होगा।

प्रो राजीव ने अपने स्वागतीय सम्बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय एवं विभाग के लिए यह बड़े ही सौभाग्य का विषय है कि हम सब को ब्रिगेडियर लाल, जिन्हें भारत चीन सीमा पर सैन्य नेतृत्व के अनुभव के साथ ही नीति निर्माण एवं शैक्षिक कार्य का भी अनुभव है, जैसे व्यक्तित्व का व्याख्यान सुनाने का मौका मिला है। विशिष्ट व्याख्यान में देश के (बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखण्ड, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, हैदराबाद, रांची, झारखण्ड आदि) प्रतिष्ठित अध्ययन संस्थानों जैसे जे०एन०यू०, बी०एच०यू एवं अन्य केंद्रीय और राज्य विश्वविद्यालयों से लगभग १५० से भी अधिक प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों की इस वेबिनार में प्रतिभागिता भी मुद्दे की प्रासंगिकता एवं विषय की उपयोगिता को दर्शाती है।

अपने अध्यक्षीय सम्भाषण में माननीय कुलपति प्रो० संजीव कुमार शर्मा ने अपने आशीर्वचन के साथ ही विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला और उम्मीद जताई कि विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं अन्य सम्मानित जन जो इस वेबिनार से जुड़े हैं, वो ब्रिगेडियर लाल के व्याख्यान से अवश्य ही लाभांवित हुये होंगे। कार्यक्रम का संचालन, राजनीति विज्ञान विभाग के सहयुक्त आचार्य डॉ० नरेंद्र कुमार आर्य ने किया, कार्यक्रम कि तकनीकी एवं शैक्षिक निरंतरता बनाये रखने का बीड़ा विभाग के ही सहायक आचार्य डॉ० नरेंद्र सिंह ने उठाया और धन्यवाद ज्ञापन विभाग की सहयुक्त आचार्य डॉ० सरिता तिवारी ने किया।

योगस्थ:कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय!

युज्यते अनेन इति योग:!

तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रीयधारणाम्!!

युक्ति युक्तं प्रगृहणीयात् बालादपि विचक्षण:।
रवेरविषयं वस्तु किं न दीप: प्रकाशयेत्।।

महामारी, साहित्य एवं समाज पर एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

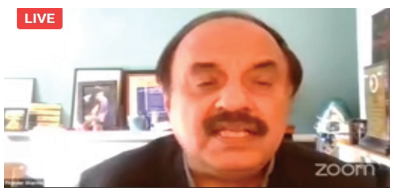

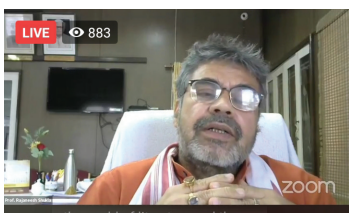

हिंदी विभाग, महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी,बिहार के तत्वावधान में "महामारी,साहित्य एवं समाज" विषयक एकदिवसीय अंत. र्राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया गया। वैश्विक संकट के समय में रचने, गुनने का माद्दा बेहद ज़रूरी है। इसी संकल्पना के साथ हिंदी विभाग ने अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया। केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. नंदकिशोर पांडेय ने अपने विस्तृत वक्तव्य में साहित्य और समाज के बीच संबंधों के सभी पक्षों पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को अपनाने की बात कही प्रो.पांडेय ने कहा कि साहित्यकार का श्रम समाज के लिए अत्यंत उपयोगी है। गाँधी, तिलक से लेकर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को जोड़ते हुए विषय को व्यापक आयाम प्रदान प्रदान करते हुए साहित्य की समाज के प्रति उप. ादेयता और भारतीय संस्कृति के महत्व को रेखांकित किया।

अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा की कोरोना ने जिस प्रकार गतिशील विश्व को एकदम से रोक दिया वह अद्भुत और अकल्पनीय घटना थी. लेकिन यह आपदा प्रकृति की देन नही है बल्कि यह विकास की गलत दिशा और दृष्टि का परिणाम है. इस आपदा ने पहली बार सभ्यता पर प्रश्न खड़ा किया है. कुछ समय से मनुष्यों को ऐसा लगने लगा था की वो प्रकृति के रहस्यों को जान गया है और वह प्रकृति से ऊपर हो गया है. लेकिन मानव इतिहास में पहली बार चिकित्सा विज्ञान खुद को असहाय महसूस कर रहा है. प्रो. शुक्ल ने इस बात को रेखांकित किया यह आपदा आने वाले समय में समाज को बदलने वाला है, अब लोग अब अपने जड़ तरफ लौट रहे हैं. हमे बाहरी चश्मों से समस्या का समाधान ना खोज कर हमे अपनी सभ्यता और संस्कृति की तरफ लौटना होगा. साहित्य को नकारात्मकता और उपदेश से उबर कर करुणा और संवेदना के स्तर पर अपनी भूमिका निभानी होगी. प्रख्यात साहित्यकार श्री तेजेन्द्र शर्मा ने अपने सारगर्भित वक्तव्य से वेबिनार को अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। महामारी,समाज एवं साहित्य की स्पष्ट व्याख्या करते हुए अपनी व्यवस्थित बात रखी। आपने कहा कि भ्रामक सूचनाओं से बचते हुए हमें पूरा फोकस आज की आपदा पर रखना है। समाज में जिम्मेदार और गैरजिम्मेदार दोनों ही तरह के लोग रहते हैं जिसका असर हम सब पर पड़ता है। निश्चित रूप से इस समय ने सोच को बदलने पर मजबूर किया है। साहित्य एवं साहित्यकार की यात्रा को रेखांकित करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि,साहित्यकार लगातार लिखता रहता है।

हिंदी विभाग,दिल्ली विश्वविद्यालय के अध्यक्ष एवं साहित्यकार प्रो.श्योराज सिंह बेचैन ने समाज के कटु यथार्थ की पड़ताल करते हुए अपनी बात रखी। इस दौर की खंडित सोच पर सवाल करते हुए प्रो. बेचैन ने कहा कि, विश्व के पटल पर हमारी पहचान भारतीय की है। आज मीडिया एवं समाज के दोहरे मापदंड ने जिस विभ. ाजन को जन्म दिया है,उसकी पड़ताल करने की आवश्यकता है। वरिष्ठ साहित्यकार श्री माताप्रसाद की चर्चित आत्मकथा झोपड़ी से राजभवन तक के एक अंश का पाठ करते हुए वैश्विक महामारी कोविड-१९ के भयावह दृश्यों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया। वेबिनार की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रो.संजीव कुमार शर्मा ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो.संजीव कुमार शर्मा(कुलपति,महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी,बिहार) ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रो.शर्मा ने कहा कि हमें भाषा प्रति सजग होना चाहिए। शब्दों के चयन के प्रति सतर्कता आवश्यक है। अपने भाषागत संस्कार के प्रति हम सभी को जागरूक रहना है। हिन्दी वभाग के अध्यक्ष और वेबिनार के अन्योजक प्रो. राजेन्द्र सिंह ने स्वागत भाषण और अंत में वेबिनार के सह-संयोजक डॉ. अंजनी श्रीवास्तव (एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग) ने आमंत्रित वक्ताओं ,देश के विभिन्न हिस्सों से जुड़े शिक्षक, शोधार्थी, छात्र/छात्राओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में कुल ५०१५ प्रतिभागियों ने ऑनलाइन पंजीकरण कराया, जिसमें प्राध्यापक वर्ग में २८४८, शोधार्थी वर्ग में ११५८, शिक्षार्थी वर्ग में ६८२ तथा अन्य वर्गों में ३०० से अधिक प्रतिभागी पंजीकृत किये गये।

योग:चित्त वृत्ति निरोध:!

संस्कृति, प्रकृति और प्रगति के अनुरूप हो शिक्षा व्यवस्था-अतुल कोठारी

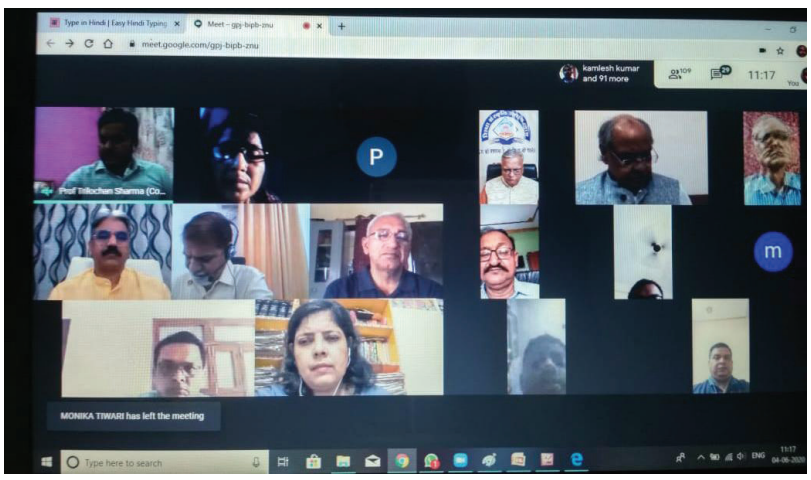

केविवि और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ राष्ट्रीय वेबिनार

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था वहां की संस्कृति, प्रकृति और प्रगति के अनुरुप होनी चाहिए। प्रबंधन की भारतीय दृष्टि भारत ही नहीं पूरे विश्व के लिए उपयोगी है। आज पर्यावरण प्रबंधन में मनुष्य विफल रहा है जबकि आज से हजारों साल पहले ही हमारे मनिषियों द्वारा पर्यावरण के लिए मंत्र लिख दिया गया। भारतीय दृष्टि यह नहीं है कि समस्या खड़ी हो जाए तो हल ढूंढो, बल्कि भारतीय दृष्टिकोण यह है कि हम लोग पहले ही प्रबंधन कर लेते हैं। ये बातें शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के सचिव अतुल कोठारी ने महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालयऔर शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार में बतौर मुख्य वक्ता कही। रामायण और महाभारत जैसे धर्मग्रंथों व शिवाजी और चाणक्य के जीवन में प्रबंधन की चर्चा करते हुए कहा कि प्रबंधन के विद्यार्थियों को भगवान राम के जीवन को देखना चाहिए कि बिना पर्याप्त संसाधनों के उन्होंने महा बलशाली रावण और उसकी सेना को कैसे पराजित कर दिया? उन्होंने भगवान राम के जीवन चरित्र से सबको साथ लेकर चलने और ऊंच नीच का भेद-भाव न करने की सीख लेने का आहवाहन किया।

"प्रबंध शिक्षा में भारतीय दृष्टि" विषय पर आयोजित इस वेब संगोष्ठी में प्रबंध शिक्षा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय संयोजक प्रो. पी.एन. मिश्र ने बतौर विशिष्ट अतिथि अपने संबोधन में कहा कि कोरोना संकट के आज की इस भयंकर प्रकृति में पूरी दुनिया वही करने की सिफारिश कर रही है जो भारतीय संस्कृति में पहले से समाई हुई है। बाहर से आने पर घर के दरवाजे पर ही चप्पल उतारना, पैर-हाथ और मुहं धोना, थोड़ा पानी अपने ऊपर छिड़क लेना,थोड़ा पानी पी लेना ये हमारी संस्कृति में समाहित रहा है जबकि दुनिया अब इसका महत्व समझ पा रही है। भारतीय शिक्षा के संबंध में कहा कि मैकाले ने जो हमसे छिना, उससे उबरने में हम अब तक कामयाब नहीं हो सके हैं। उन्हा. ेने धर्मग्रंथों को प्रबंधन के पाठ्यक्रम में शामिल करने का आहवाहन किया। स्थानीय स्तर पर प्रबंधन के बारे में कहा कि हम जिनके साथ रह रहे हैं, जिनके साथ काम कर रहे हैं उनके प्रबंधन के लिए क्या कर रहे हैं, यह हमें सोचना ही होगा, इसकी अनदेखी कर आप एक सफल प्रबंधक नहीं हो सकते।

वेबिनार के मुख्य अतिथि, पंजाब विवि, चण्डीगढ़ के कुलपति प्रो.राजकुमार ने अपने संबोधन में कहा कि भारत की शिक्षा प्रणाली में मानवीय पक्ष पर जोर दिया जाता है, जिसमें अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को कम करने की बात की जाती है इसमें मानवीय पक्ष सामने आता है। मानवीय पक्ष को लेकर तमाम शोध पत्र और पुस्तके आई हैं। जबकि पाश्चात्य प्रणाली में उपभोग की बात ज्यादा होती है। भारतीय दृष्टि में प्रबंधन विज्ञान उतना ही पुराना है जितना अन्य हैं। हमारा मानना है कि हमारा प्रबंधन शास्त्र गीता पर आधारित है। जिसमें कहा जाता है कि कर्म ही पूजा है। भारतीय प्रबंधन में कर्तव्य की बात गीता से आई। हमारी संस्थाएं कहती हैं कि अपने प्रमोशन के बारे में चिंता मत करो, उसकी चिंता हम करेंगे। आप अपना कर्तव्य निभाईये।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में वेबिनार के मुख्य वक्ता अतुल कोठारी की प्रशंसा करते हुए कहा कि आप शिक्षा के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं उनसे हम सभी लोग परिचित भी हैं। सभी विद्वानों की बातों को रेखांकित करते हुए प्रबंधन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष से कहा कि इन सुझावों को आप प्रबंधन विज्ञान के पाठ्यक्रमों में शामिल कीजिये, विवि की तरफ से हर तरह की मदद की जाएगी। प्रो. शर्मा ने इस आयोजन में शामिल सभी वक्ताओं व सहभागियों का आभार जताते हुए वेबिनार के संयोजक एवं वाणिज्य एवं प्रबंधन विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो.पवनेश कुमार की इस महत्वपूर्ण आयोजन के लिए सराहना की।

वेबिनार के संयोजक एवं संचालक प्रो. पवनेश कुमार ने अपने संक्षिप्त संबोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति सर्वे भवन्तु सुखिन: व अतिथि देवो भव: की रही है। हमारे मनिषियों द्वारा बताये गये अस्तेय व अपरिग्रह जैसे मार्गों पर चलने का विचार पूरे विश्व में हो रहा है। उन्होंने वेबिनार में सहभागी सभी वक्ताओं के व्यक्तित्व व कृतित्व की प्रशंसा की और उनके सुविचारों से सभी सहभागियों के लाभान्वित होने की बात कही।

इससे पूर्व वेबिनार के शुरुआत में सह-संयोजक प्रो. त्रिलोचन शर्मा ने सभी अतिथियों व एवं सहभागियों का स्वागत किया और विषय के संबंध में संक्षेप में जानकारी दी। वेबिनार के सह-संयोजक डॉ.आशीष रंजन सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस वेबिनार में केविवि के प्रो. राजीव कुमार, डॉ. सपना सुगंधा, डॉ.अल्का लल्हाल, कमलेश कुमार, डॉ. दिनेश व्यास, डॉ.पाथलोथ ओंकार, शेफालिका मिश्रा, दीपक दीनकर, माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय के डॉ.आदित्य मिश्रा समेत बड़ी संख्या शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी व देश के विभिन्न विवि के विद्वान ऑनलाइन उपस्थित रहे।

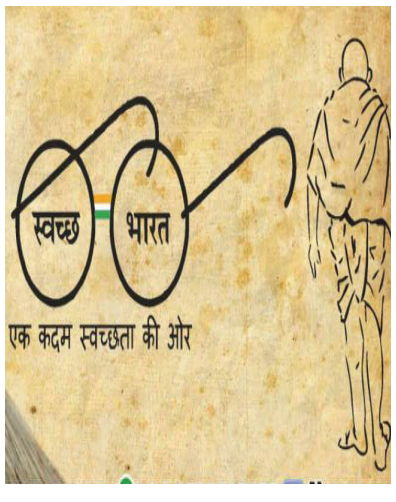

संगीत

संगीत जो गायन, वादन व नृत्य
का सम्मिलित रूप है
आत्मा को परमात्मा से एकाकार
करने का,देवों के देव महादेव
को मोहित करने का, कृष्ण कन्हैया के
गइयों को मंत्रमुग्ध करने का
सामर्थ्य रखता है, मुझे लगता है आपकी हीं
तरह बहुत कुछ इसका भी है
तासीर-ए-महसूसियत।

कुमारी प्राची
मीडिया अध्ययन विभाग

संस्कृत केवल साहित्य ही नहीं है अपितु सम्पूर्ण रूप से विज्ञान भी है- प्रो.बलराम सिंह

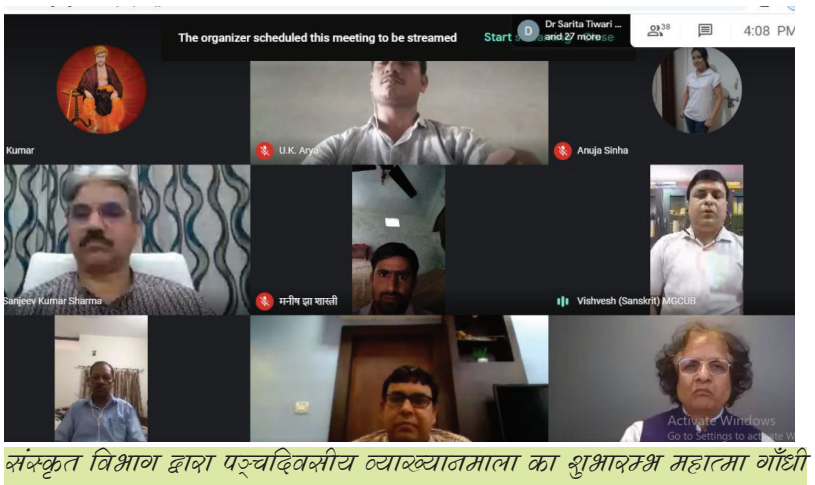

संस्कृत विभाग द्वारा पञ्चदिवसीय व्याख्यानमाला का शुभारम्भ महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,बिहार के संस्कृत विभाग द्वारा १३-१७ जून, २०२० तक चलने वाले पञ्चदिवसीय व्याख्यानमाला का शुभारम्भ किया गया। इसके प्रथम वक्ता प्रो.बलराम सिंह प्रेसिडेन्ट ऑफ इन्सटीटयूट ऑफ एडवांस साइन्स एण्ड फौण्डिन्ग डिरेक्टर,सेन्टर ऑफ इण्डिक स्टडीज,यूएसए ने द रोल एण्ड अपॉर्च्युनिटी फ़ोर संस्कृत इयुरिन्ग कोरोना टाइम्स रिलेटेड टू साइन्स, हेल्थ एण्ड सोसायटी विषय पर अपना वक्तव्य दिया। व्याख्यानमाला में उपस्थित सभी अतिथियों, विद्वज्जनों एवं प्रतिभागियों का स्वागत एवं अभिवादन संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया। उक्त व्याख्यान माला की अध्यक्षता राजनीतिविज्ञान के विशेषज्ञ तथा संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान्, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रो. सञ्जीव कुमार शर्मा ने किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में कुलपति महोदय ने कहा जैसे - जैसे मनुष्य शास्त्रों की तरफ बढ़ता है वैसे- वैसे ही वह विज्ञान की तरफ जाता है- यदा यदा हि मनुष्यः शास्त्रमधिगच्छति...।

प्रो.बलराम सिंह ने व्याख्यान में संस्कृत की वैज्ञानिकता पर बल देते हुए संस्कृत के शब्दों की वैज्ञानिकता, आयुर्वेद, योगसूत्र आदि पर अपना विचार व्यक्त किया। प्रो.सिंह जी ने संस्कृत में विज्ञान की विद्यमानता को स्पष्ट करते हुए कहा कि- संस्कृत में साइन्स को देखता हूँ इसलिए संस्कृत में मेरी रुचि है। उन्होंने अपने उद्बोधन में संस्कृत की वैज्ञानिकता को सिद्ध करते हुए कहा कि- संस्कृत शास्त्रों के अध्ययन से समाज की अनेकों समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है। उन्होंने भारत सरकार द्वारा संस्कृत शब्दों को लेकर चलाई जा रही विभिन्न योगनाओं यथा- उदय, उज्जवला, हृदय, मुद्रा, आयुष आदि शब्दों की वैज्ञानिकता को भी रेखांकित किया। उन्होंने भगवद्गीता के स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः, योगसूत्र के योगश्चित्तवृत्ति निरोधः आदि की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए संस्कृत के ज्ञान से व्यक्ति के मस्तिष्क की स्थिरता से प्राप्त बल द्वारा उसमें विश्लेषणात्मक क्षमता के विकास का भी वैज्ञानिक रूप से उल्लेख किया। व्याख्यानमाला का धन्यवाद ज्ञापन विभाग के वरिष्ठ सह-आचार्य डॉ.श्याम कुमार झा ने किया। व्याख्यानमाला में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के अध्यापकगण, शोधार्थीगण एवं संस्कृत विभाग के अध्यापक डॉ.अनिल प्रताप गिरि, डॉ. बबलू पाल,डॉ.विश्वेश, तथा श्री विश्वजीत वर्मन एवं छात्रगण उपस्थित रहें।

केविवि और मायलॉफ्ट के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

किसी भी पुस्तकालय में कितना संसाधन है ये महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि उपलब्ध संसाधनों का उपयोग पाठको के लिए कितना हैं ये ज्यादा महत्वपूर्ण है। ग्रन्थालय आज के कोविड -१९ वैश्विक महामारी में भी प्रासंगिक एवं पाठको के लिए उपयोगी है। ग्रंथालयों द्वारा पाठको तक कैसे पहुंचा जाए जब वे अपने घरों में कॉरोना वायरस के कारण बंद हो गए हैं। उक्त बातें मायलॉफ्ट के अतुल ने महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय और मायलॉफ्त के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार में बतौर मुख्य वक्ता कही। साथ ही इसके लिए उपलब्ध मायलॉफ्ट टूल्स के बारे में अमित शुक्ला और रितची ने विस्तार से चर्चा की।

"रिसर्च कंटेंट कंजप्शनस इकोसिस्टम" विषय पर आयोजित इस वेबिनर में रितवि ने विभिन्न माध्यमों में उपलब्ध संसाधनों से किस प्रकार से ग्रंथालयों के पाठक अपने से संबंधित सूचना को, ज्ञान को प्राप्त कर सकते है इसपर विचार किया और बताया।

प्रो. रंजीत कुमार चौधरी ने इस आयोजन में शामिल सभी वक्ताओं व सहभागियों का आभार जताते हुए वेबिनार के सह संयोजक डॉक्टर भवनाथ पांडेय को इस महत्वपूर्ण आयोजन के लिए प्रशंसा की। वेबिनार के सह-संयोजक डॉक्टर भवनाथ पांडेय ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस वेबिनार में केविवि के डॉक्टर मधु पटेल, डॉ. सपना समेत बड़ी संख्या में शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी व देश के विभिन्न विवि के विद्वान उपस्थित रहे।

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग में राष्ट्रीय शोध कार्यशाला

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कंप्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा साप्ताहिक राष्ट्रीय शोध कार्यशाला का विधिवत ऑनला. इन उद्घाटन हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि विवि के माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा थे व मुख्य वक्ता आईआईआईटी बीएचयू के वरिष्ठ प्रोफेसर अनिल कुमार त्रिपाठी थे।

कार्यक्रम के आरम्भ में समन्वयक डॉ. पवन चौरसिया ने सभी अतिथियों, शिक्षकों व प्रतिभागियों का स्वागत किया। इसके बाद विभागाध्यक्ष प्रो.विकास पा.रीक ने कार्यशाला के कार्यक्रम का परिचय दिया व बताया कि भा.रत के २६ राज्यों से करीब ३०० प्रतिभागियों ने इस निःशुल्क कार्यशाला के लिये पंजीकरण किया है। तत्पश्चात संकायाध्यक्ष प्रो. अरुण कुमार भगत ने अपना वक्तव्य दिया और विभाग को इस आयोजन के लिये साधुवाद दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व विवि के माननीय कुलपति प्रो संजीव कुमार शर्मा ने अपने आशीर्वचन में कहा कि विश्वविद्यालय व विभाग द्वारा सतत ऐसे अकादमिक अनुष्ठान किये जा जा रहे है जो प्रसंशानिये है व इन आयोजनों को व्यापक स्तर पर लोक कल्याण के प्रश्नों से जोड़ने पर जोर दिय.ा। उन्होंने समाज में बढ़ती जा रही डिजिटल खाई को पाटने की समस्या पर विचार करने का आहवान किया। साथ ही देशी भाषाओं को भी कंप्यूटर से जोड़ने का सुझाव दिया। उन्होंने उदाहरण देकर साइबर ओफेंस की घटनाओं से निपटने को भी एक सामयिक चुनौती बताया। साथ ही शोध में नैतिक मूल्यों को सम्मिलित करने पर बल दिया।

मुख्य वक्ता प्रो. ए के त्रिपाठी ने सबसे पहले मुद्दों, चुनौतियों व समस्याओं में फ़र्क समझाया.ा। उन्होंने किसी भी नये कार्य में समस्या को समग्र रूप से समझने की आवश्यकता पर जोर डाला। फिर वाशिंग मशीन व लस्सी बनाने के उदाहरण से उन्होंने नवाचार और आविष्कार का भेद समझाया। प्रो. त्रिपाठी ने इंजीनियरिंग शिक्षा को पुनर्परिभाषित किये जाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। चौथी औद्योगिक क्रान्ति व तत्सं.बंधी चुनौतियों के बारे में समझाया। उनका व्याख्यान रोचक व गहरी जानकारियों से भरपूर था। सिस्टम डिज़ाइन और टेस्टिंग की बारीकियों पर उन्होनें गहराई से समझाया। कार्यक्रम के अंत में विभाग के डॉ. सुनील कुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। यह कार्यशाला २३ जून तक चली व जिसमें एनआइटी भोपाल, लखनऊ विवि, इग्नू, गुरुनानक देव विवि अमृतसर आदि के वरिष्ठ प्रोफेसरों के व्याख्यान आयोजित हुए। कार्यशाला के बाद फीडबैक लिया जा रहा है और प्रतिभागियों को ई प्रमाणपत्र दिये जाएंगे।

योग द्वारा स्वास्थ्य और जीवन कौशल विषयक संकाय संवर्धन कार्यक्रम आयोजित

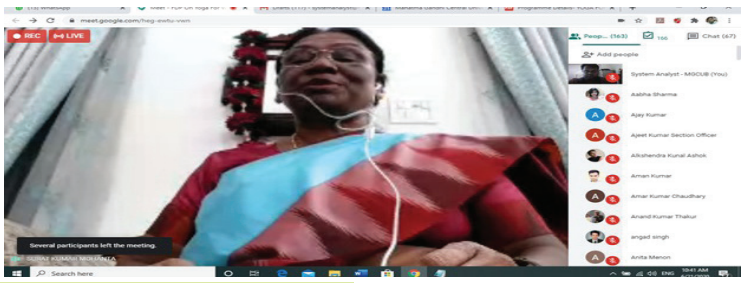

शैक्षिक अध्ययन विभाग , महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी बिहार तथा योग विभाग रांची विश्वविद्यालय रांची के संयुक्त तत्वाधान में ६ वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के पावन अवसर पर योग द्वारा स्वास्थ्य और जीवन कौशल विषयक पांच दिवसीय संकाय संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अभा.सी मंच पर स्वागत समारोह द्वारा हुआ। जिसकी शुरुआत कार्यक्रम के समन्वयक डॉ आनंद ठाकुर, योग विभाग रांची विश्विद्यालय ने अतिथियों का परिचय करवाया। तत्पश्चात कार्यक्रम की संरक्षक रांची विश्वविद्यालय की प्रति कुलपति आचार्य कामिनी कुमार ने स्वागत भाषण प्रस्तुत की। अतिथियों का तहे दिल से स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि इतिहास गवाह है हर संकट की घड़ी में मानव जाति ने राह बनाई है। तत्पश्चात शैक्षिक अध्ययन विभाग के आचार्य आशीष श्रीवास्तव, संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय महात्मा गांधी केंद्रीय विश्व.विद्यालय बिहार ने अपने वक्तव्य में कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल के उपस्थिति में गरिमामय रही। योग द्वारा जीवन मे होने वाले सकारात्मक परिवर्तन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भगवान श्री कृष्ण के कर्म में कुशलता ही योग है।

मुख्य अतिथि आदरणीय महामहिम द्रौपदी मुर्मू, राज्यपाल झारखंड प्रदेश ने अपने वक्तव्य में कहा कि मुझे इस बात की खुशी है कि मानवीय जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी विधा का सूत्रधार कोई और नही बल्कि भारत भूमि है । मानवता की रक्षा के लिए , आज वैश्विक महामारी में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होने वाली योग को अंतर्राष्ट्रीय मंचो पर स्थापित करने तथा विभिन्न देशों में प्रचार ,प्रसार के लिए माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का शुक्रिया अदा की। साथ ही साथ अपने जीवनचर्या में योग के कौन- कौन आसान और प्राणायाम करती है के अनुभवों को साझा की। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार प्रातःकाल ४ बजे उठकर ध्यानासन करती है। कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए आयोजन समिति को धन्यवाद दी। कार्यक्रम के अगली कड़ी में कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक आचार्य संजीव कुमार शर्मा (कुलपति म0 ग0के0वि0 बिहार) ने आशीर्वचन के रूप में कहा कि किस तरह से भारतीय परम्परा में वसुधैव कुटुम्बकम की मान्यता को योग भाषा , जाति, धर्म, पंथ के परिधि से ऊपर उठकर मानव कल्याण का माध्यम बना। योगस्य चित्तवित्ति निरोध के महिमा को व्याख्यायित किये , उन्होंने यह भी कहा कि योग को सिर्फ आसन तक सीमित रखना संकीर्णता है , योग में आसान सिर्फ एक विधा है , योग यम ,नियम, से प्रारंभ होकर समाधि तक जाता है । जहाँ मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है । ऐसा हमारे मनीषियों ने कहा है । अतः योग के विस्तृत स्वरूप को समझना होगा ।

कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक आचार्य रमेश कुमार पांडेय, कुल.पति रांची विश्वविद्यालय ने अपने उद्बोधन में कहा कि योग के द्वारा व्यक्ति सहज, सरल तथा लचीलापन को प्राप्त करता है ,तथा शारीरिक एवं मानसिक सुख को प्राप्त करता है । फिट इंडिया प्रोग्राम , संयुक्त राष्ट्र संघ में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में स्थापित करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद दिया। धन्यवाद ज्ञापन आचार्य अमर जीत चौधरी, कुलसचिव रांची विश्वविद्यालय ने किया ,जिसमे उन्होंने अतिथियों के बहुमूल्य समय के मध्य में समय निकाल कर कार्यक्रम में सहभागिता की। तकनी.की सत्रों में आचार्य गणेश शंकर ,सागर विश्वविद्यालय आचार्य टी0 मुकुणालिनी हैदराबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ ईश्वर भारद्वाज गुरुकुल विश्वविद्यालय हरिद्वार के रूप में विषय विशेषज्ञों का सानिध्य प्राप्त हुआ, तथा प्रतिभागियों से अपने अनुभवों को साझा किए। कार्यक्रम का सफल संचालन शिक्षा विभाग की सहायक आचार्य तथा कार्यक्रम की संयोजक मनीषा रानी ने किया। इस मौके पर आभासी मंच पर २०० से ज्यादा प्रतिभागी तथा विश्व.विद्यालय परिवार के समस्त विभागाध्यक्ष, संकायाध्यक्ष तथा सभी आचार्य गण उपस्थित थे , साथ ही साथ शिक्षा विभाग के सह आचार्य डॉ मुकेश कुमार (कार्यक्रम समन्वयक) सहायक आचार्य डॉ पैथलोथ ओमकार (कार्यक्रम सह संयोजक) तथा तकनीकी सत्र का धन्यवाद ज्ञापन डॉ रश्मि श्रीवास्तव (कार्यक्रम सह - संयोजक)ने की। इस अवसर पर गणेश शुक्ल , मनीष ,अंगद सिंह, सुनील, रंजय, आलोकित, .इंदु, सविता , नवीन ,संजीव, कंचन नूतन तथा विभाग के समस्त शोधार्थी तथा विद्यार्थी गण आभासी मंच पर तकनीकी माध्यमो से जुड़े हुए थे ।

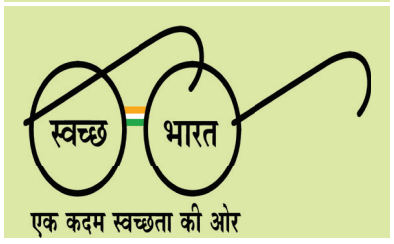

वर्तमान समय में शांति के समक्ष चुनौतियों पर केन्द्रित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

एमजीसीयूबी, इंडोनेशिया इंस्टीटयूट और एशिया पेसिफिक पीस रिसर्च एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार के गांधीवाद एवं शांति अध्ययन विभाग तथा रा. जनीति विज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रुप से एवं इंडोनेशिया इंस्टीटयूट ऑफ साइंस जकार्ता, इंडोनेशिया एवं एशिया पेसिफिक पीस रिसर्च एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबीनार का सफलतापूर्वक आयोजन १९-२० जून २०२० को किया गया। उद्घ. टन समरोह की अध्यक्षता कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय बि. हार एवं अतिथियों का स्वागत प्रोफेसर राजीव कुमार, संकायाध्यक्ष ,सामाजिक विज्ञान विभाग ,महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय बिहार ने किया। इस सत्र का संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर अभय विक्रम सिंह के द्वारा किया गया।

जिसमें विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से अनेकों प्रतिभागियों ने जूम मीटिंग एवं फेसबुक लाइव के माध्यम से भाग लिया एवं लाभान्वित हुए।

वेबीनार में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए प्रोफेसर मेट मेयर, सह-सचिव, जनरल इंट. रनेशनल पीस रिसर्च एसोसिएशन ने शांति से संबंधित सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियों के बारे में तथा महिला शांति बनाने के लिए परिवार में अच्छे तरीके से कार्य करती है इस तरह उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में शांति के लिए परिवार से बाहर निकल कर आना चाहिए जैसे विषयों पर मुख्य रूप से चर्चा किया एवं डॉक्टर जेनिफर के लिन, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, द कॉन्ट्रैक्ट प्रोजेक्ट यूएसए ने शांति की चुनौतियों पर अपना वक्तव्य देते हुए बताया कि लोगों में अहंकार व्यक्तिगत, सामाजिक एवं आर्थिक आधार पर है, जिसके कारण हिंसा हो रही है इसके लिए विश्वविद्यालय के जरिए जागरूकता लाने कि जरुरत है, कार्यक्रम के प्रथम दिवस उपस्थित हुए सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन एसोसिएट प्रोफेसर डॉक्टर असलम खान ने किया।

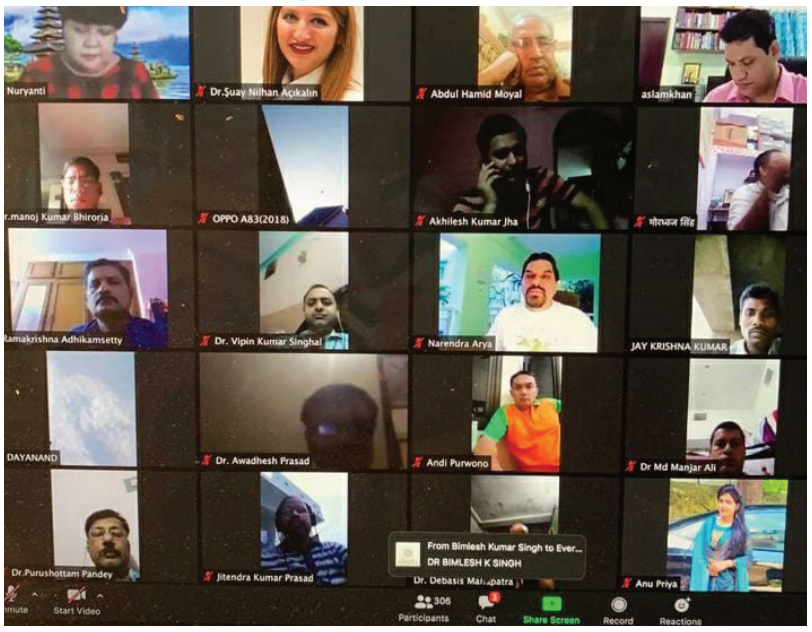

अंतरराष्ट्रीय वेबिनार के प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉक्टर फिरमान नूर, अध्यक्ष, सेंटर फॉर पॉलिटिकल रिसर्च, इंडोनेशिया इंस्टीटयूट ऑफ साइंस, जकार्ता, इंडोनेशिया एवं अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत प्रोफेसर सुनील महावर, विभागाध्यक्ष, गांधीवाद और शांति अध्ययन विभाग, ने किया। सत्र का संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर अभय विक्रम सिंह के द्वारा किया गया। सारगर्भित ब्याख्यान में डॉ राजीव रंजन, एसोसिएट प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ लिबरल आर्ट्स, शंघाई विश्वविद्यालय, शंघाई चाइना ने हिमालय में शांति इंडिया, चाइना और नेपाल के बारे में सीमा विवाद और द्विपक्षीय संबंधों के बारे में बताया, डॉक्टर महताब आलम रिजवी, एसोसिएट प्रोफेसर, नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कनफ्लिक्ट मेरी सॉल्यूशन ने पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका में शांति के लिए संघर्ष और चुनौतियों के बारे में प्रस्तुति दी. डॉक्टर दिनदारा मेगापुत्री मेंगको(सेंटर फॉर पॉलिटिकल स्टडीज,स्प्च, इंडोनेशिया) ने कोविड-१९ के दौरान इंडोनेशिया सैन्य भूमिका पर चर्चा किया, डॉ बावा सिंह(एसोसिएट डीन, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल, स्टडीज सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ पंजाब, भटिंडा इंडिया) ने सेंट्रल एशिया में सुरक्षा चुनौतियां और आगे का रास्ता के विषय पर बताया एवं डॉक्टर तातियाना करबचुक, एसोसिएट प्रोफेसर, गवर्नमेंट एंड सोसाइटी विश्वविद्यालय ने मध्य पूर्व और उत्तर अफ्रीका क्षेत्र में सुरक्षा की धारणा पर अपनी प्रस्तुति दी। इस प्रथम तकनीकी सत्र का धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर अंबिकेश कुमार त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम दुसरे दिन द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉक्टर श्री तुरयंती,स ह-सचिव, एशिया पेसिफिक पीस रिसर्च एसोसिएशन)एवं अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अभय विक्रम सिंह एवं संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन एसोसिएट प्रोफेसर डॉक्टर नरेंद्र आर्य ने किया। वक्ता प्रोफेसर लाइद जाझलामी, अल्जीरिया विश्वविद्यालय अल्जीरिया ने मध्य-पूर्व में शांति और सुरक्षा की हिस्सेदारी और चुनौ. तियों के बारे में बताया, स्टेला माईचिओंग(यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन, यूके) ने कोविड-१९ संकट के बीच शांति शिक्षा की बात कही, डॉक्टर अन्ना वेलिकाया (रिसर्च फेलो, रशियन एकेडमी ऑफ साइंस मॉस्को) ने मानव सुरक्षा प्रदान करने में महिला की भूमिकाओं के बारे में व्याख्यान दिया, डॉक्टर सुएय निल्हन, वाएस प्रेसिडेंट, इंटरनेशनल साइंस एसोसिएशन, अंकारा तुर्की ने पोस्ट बवअपक-१९ युग में तुर्की के लिए अवसर और चुनौतियों के बारे में जानकारी दी एवं डॉक्टर असलम खान ने दक्षिण एशिया में शांति के लिए चुनौतियों से अवगत कराया।

इस कार्यक्रम में लगभग २९०० से अधिक प्रतिभागियों ने नामां. कन कराया। इस अंतरराष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन विश्व. विद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा के मुख्य संरक्षण मे किया गया, जि. सके संयोजक एसोसिएट प्रोफेसर डॉक्टर असलम खान ,आया. जन सचिव एसोसिएट प्रोफेसर डॉ जुगल दाधीच एवं आयोजन सह-सचिव असिस्टेंट प्रोफेसर डॉक्टर अभय विक्रम सिंह एवं असिस. टेंट प्रोफेसर डॉक्टर नरेंद्र सिंह ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कार्यक्रम समिति सुनील महावर, एसोसिएट प्रोफेसर डॉक्टर सरिता तिवारी, डॉक्टर नरेंद्र आर्य एवं असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ पंकज कुमार सिंह, डॉक्टर ओम प्रकाश गुप्ता एवं डॉ अंबिकेश त्रिपाठी सक्रिय रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रतिवेदक पी-एच०डी शोधार्थी वीरेंद्र कुमार गांधी, आशुतोष शरण, विजय शंकर चौधरी तथा अनुप्रिया एवं नामांकन की जिम्मेदारियों का निर्वाह आशुतोष आनंद ने किया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्र अरुण ,गौ. रव ,दीपिका तथा अन्य छात्र-छात्राएं एवं विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं शोधार्थी गण उपस्थित रहे।

ई-लर्निंग की जरूरत को उजागर कर रहा कोरोना काल

वैश्विक त्रासदी के इस समय में शिक्षा क्षेत्र के आगे कठिनाई खड़ी हो गई हैं। विद्यार्थियों को शैक्षणिक हानि हो रही है। इस समय ई-लर्निंग पद्धति लोकप्रिय हो रही है, क्योंकि यह सस्ती है, इसमें लचीलापन है। व्यक्ति अपनी जगह, अपने समय के अनुसार रूचि के पाठ्यक्रम में नामांकन करा सकता है। ई-लर्निंग के जो स्त्रोत और प्लेटफॉर्म आज हमें उपलब्ध है,उनमें दूरदर्शन, स्वंय,नेशनल डियाँजिटरी ऑफ ओपेन एजुकेशन के शामिल होने के साथ ही यू-ट्यूब, जूम के अलावा अनेक प्रकार के निजी और स्वतंत्र एप लोगों ने विकसित किए हैं। इस कोरोना काल में ई-लर्निंग से छात्रों को काफी मदद मिली है।

इसमें संदेह नहीं कि आज इंटरनेट की सुविधा हमा. रे पास उपलब्ध हैं। इसके कारण विद्यार्थियों में ई-लर्निंग के प्रति रूचि बढीं है।अब स्पेशल एजूकेशन जोन स्थ. ापित करने की बात हो रही हैं। इनके स्थापित होने के बाद ई-लर्निंग के जरिए हमें न सिर्फ अपने देश के विशेषज्ञों की विशेषज्ञता का लाभ मिलेगा , दुनिया भर के विशेषज्ञों से भी हम संवाद बना सकेंगे।

सुरभि सिंह
मीडिया अध्ययन विभाग

चांदनी की चादर

अपने घरों में बैठ कर भी, क्यों घबरा रहे हैं लोग ?
उनसे पूछिए जो भूखे पेट, चांदनी की चादर लिए,
पैरों के छाले में भी जो पैदल आ रहे हैं लोग..!!
अब दौड़ी है ना ये बसें और ट्रेन
वरना कौन सुनता है इनकी और कौन मिलाता है इनसे नयन।
आज के व्यस्त दौर में भी, ये शहर है इतना वीरान
यहां नवरात्र में भी थी बंदी और बाजार सुनसान...!!
और अर्थव्यवस्था का नाम ले, दांव पर लगा दी गई लाखों जान।
बंद करो अभी भी उस मौत के बाजार को
वरना ना कभी मनेगी कोई दीवाली और ना ही रमजान...!!
हाल ऐसा रहा गर तो बस दिखेगी लाशें
और रह जाएगा बस दूर तलक समसान ही समसान...!!
बोल सको तो बोल लो, ट्वीट का खेल ही खेल लो...
क्या था वह डॉक्टरों के साथ अश्लीलता
या फिर वह पुलिसकर्मीयों के साथ मारा-मारी।
अभी भी यदि ये छोर गए तो,
बन रह जाओगे बस लावारिस लाश ..!!
और रह जाओगे इस धरती पर एक बोझ सा....
कब तक बन फरिश्ता वो जान तेरी बचाएंगे.....
अभी तो आधी ही जनता साथ है
बताओ ना इंडिया....
ये पूरे कब साथ आएंगे?

कुमारी दीपा
मीडिया अध्ययन विभाग

लये संबोधयेत् चित्तं विक्षिप्तं शमयेत् पुनः।
सकशायं विजानीयात् समप्राप्तं न चालयेत्।।

Mahatma Gandhi Central University During COVID-19 Pandemic

Brief report of the activities of Mahatma Gandhi Central University during the lockdown due to Covid-19 from 14th march 2020 .

Meetings of Deans/ Officials

The Vice Chancellorhas through regular virtual meetings with the administration and faculty, constantly given directions, which in turn ensured efficient and productive use of this lockdown period. From creating a repository of over 900 PPTs, 40 video lectures of faculties from various departments, 23 Facebook Live Lectures by eminent scholars and academicians across the country, Mahatma Gandhi Central University is also hosting a series of live and on-demand webinars on student-centered learning, creating community online, and navigating the transition to digital learning, which is the need of the hour.

6th April 2020

It was directed by the Vice Chancellor that the team of E-Vimarsh will take needful action for availability of links of study materials already available on websites of UGC/ MHRD for the students on university website, social media and through the team itself. The Hon'ble Vice Chancellor, during the discussion, raised a concern regarding information/ data in respect of number of students who are being benefited from the study materials available on E-Vimarsh /PPT

The Vice Chancellor directed the DSW Board to develop a mechanism to take care of the mental health of the students.

12th April 2020

The VC appealed to share innovative ideas/suggestions for 'Bharat Padhe Online' from teachers, researchers and students. The VC also asked them to encourage all teaching, non-teaching staff and students to download "Aarogya Setu App" which is developed by the Ministry of Electronics & IT to take preventive measures to COVID-19. The Vice Chancellor also made aware about the "YUKTI", a web portal launched by the Ministry of HRD that aims to record and monitor initiatives and efforts of Institutions during the unfortunate time of COVID-19. He asked all Deans to consider how this portal will be innovative for the teachers and students. It was decided in the meeting that every teacher would take an online class daily. It was decided after discussion that all Internal Examinations might be taken at Departmental level

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

30th April 2020

The Vice Chancellor welcomed and congratulated all faculty members who have delivered their online lecture series through e- Vimarsh and asked concerned to ensure availability of such type of more lecture series from the remaining faculty members on this platform. The Vice- Chancellor asked the Coordinator, IQAC to take suitable steps on the suggestive measures as issued by the UGC from time to time and to ensure IPR protocol.

1st May 2020

The Vice Chancellor invited the suggestions/ observations of the Deans, HoDs and other officers on the UGC Guidelines on Examinations & Academic Calendar for the Universities, which were already circulated to them. Establishment of a COVID-19 Cell, Completion of Semester Examinations, Development of virtual classroom/ Lab were discussed at great length in this meeting.

4th June 2020

The Vice-Chancellor expressed his happiness over the fact that the university has not only organised a large number of Webinars right from the very early phase of nationwide lockdown forced by the threat of COVID-19 but is far ahead than many other universities in the successful completion of all other academic activities as well i.e. completion of syllabus, completion of internal examination/ assessments and all other related activities in time. For this remarkable achievement, he thanked and congratulated all faculty members and other concerned officials. He also expressed his pleasure over the presence of large number of students, scholars, teachers and academicians in the online academic events conducted by the university. Preparedness of upcoming End-Semesters (Even) Examinations and Admission Process for Academic Session 2020-21 were also discussed in this meeting.

Academic Council meeting

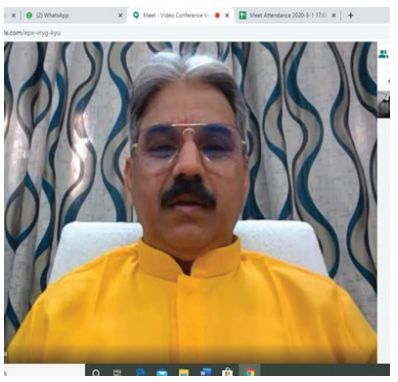

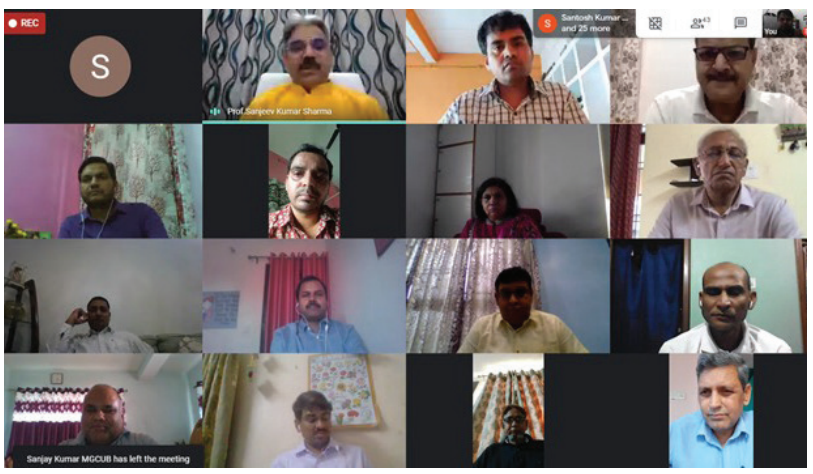

The 6th Academic Council Meeting of the Mahatma Gandhi Central University was held on 19th May 2020 through Video Conferencing (Google Meet). The Chairman briefed all the members about the progress made by the university on each front during COVID-19. It was informed to the members of the Academic Councilthat the faculty members of the university have been actively engaged in conducting online classes, Facebook Live Sessions, Webinars/Zoom Classes and Lectures on YouTube Channel of the university. All the faculty members of the university are in constant touch with their students through all the modes of digital communication. Many external experts were also engaged for delivering special lectures.Most of the faculty members prepared PowerPoint Presentations for their respective students [more than 950 PPTs had been uploaded on the university website till date of meeting of Academic Council]. A detailed report of the activities conducted by the university during two-month period of lockdown documented in approximately 130 pages, was presented before the Academic Council. The Vice-Chancellor placed on record his appreciation for the faculty members for their stupendous efforts. The Academic Council noted the Establishment of Cell for handling students' grievances related to examinations and academic activities during COVID-19 pandemic, by the university in accordance with the Guidelines of the UGC, New Delhi. The Academic Council noted the Constitution of Committee to facilitate and address any kind of mental health, psycho-social aspects and well-being of the students during and after COVID-19, by the University in accordance with the communication received from UGC. The University Prospectus 2020-21for admission in various Certificate Programme (UG, PG, M.Phil. and Ph.D. Programme of Studies) was placed before the Academic Council. The 'Guidelines on Examinations and Academic Calendar in view of COVID-19 Pandemic and Subsequent Lockdown' adopted by the University was also reported to the Academic Council.

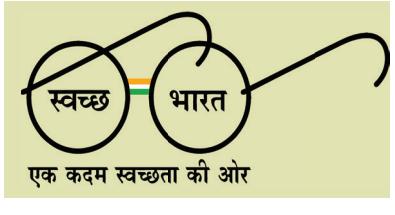

E- Vimarsh: MGCUB as a torchbearer of knowledge.

Mahatma Gandhi Central University came up with an innovative idea of an online lecture series by faculty and eminent speakers. The series was named- E Vimarsh. The first video lecture was delivered by the Vice Chancellor, Professor Sanjeev Kumar Sharma.

S.No.	NAME	TOPIC
1.	Prof. Sanjeev Kumar Sharma	The making of Indian Constitution
2.	Dr. Aslam Khan	Peace and Conflict Resolution
3.	Dr. Umesh Patra	White Paper' by Sharan Kumar Limbale
4.	Dr. Ambikesh Tripathi	Conflict and Security Perspective
5.	Dr. Ambikesh Tripathi	'Conflict and Socio-Economic Perspective
6.	Dr. Kalyani Hazri	"Strange Meeting" by Wilfred Owen
7.	Dr. Vikas Pareekh	Research and Publication Ethics (RPE)
8.	Dr. Bimlesh Kumar Singh	Tradition and Individual Talent: T.S Eliot
9.	Dr. Aslam Khan	Nuclear Disarmamnet
10.	Dr. Bimlesh Kumar Singh	Impersonal Theory of Poetry: T.S Eliot
11.	Dr. Parmatma Mishra	'सांस्कृतिकसंचारकेमाध्यमकेरूपमेंभ. षाऔरव्याकरण'
12.	Dr. Dinesh Vyas	Study of Indian Villages (Part-1)
13.	Dr. Dinesh Vyas	Study of Indian Villages (Part-2)
14.	Prof. Sunil Mahawar	Data Collection
15.	Prof. Sujit Kumar Choudhary	Relevance of Sociology
16.	Dr. Umesh Patra	Pygmalion by G B Shaw An Introduction

S.No.	NAME	TOPIC
17.	Dr. Subrata Roy	Panel data Econometrics
18.	Dr S.K. Srivastava	X Ray Spectroscopy
19.	Dr. Subrata Roy	Time series Econometric
20.	Dr. Bimlesh Kumar Singh	The Death of an Author: Roland Barthes
21.	Dr. Subrata Roy	Time series Multiple regression
22.	Dr Madhu Patel	Corporate Authorship 2 (Govt, its organs and series)
23.	Dr S.K. Srivastava	Vibrational Spectroscopy
24.	Dr. Sunil Mahawar	Interview method of data collection
25.	Prof. Rajeev Kumar	What is Research
26.	Dr Jugal Kishor Dadhich	Legendary Philosopher and Economist J.K. MEHTA.
27.	Dr. Sunil MahawAar	Schedule Method
28.	Dr. Sunil Mahawar	Questionnaire Method
29.	Dr. Umesh Patra	Pygmalion: The Ending
30.	Dr. Ambikesh Tripathi	Gandhi on Capitalism
31.	Dr. Ambikesh Tripathi	Khadi Economics by M.K Gandhi
32.	Dr. Subrata Roy	Heteroscedascity in Time Series
33.	Dr. Subrata Roy	Auto Correlation and Multicollinearity

अतितृष्णा न कर्तव्या तृष्णां नैव परित्यजेत् ।
शनैः शनैश्च भोक्तव्यं स्वयं वित्तमुपार्जितम्।।

Webinars

S.No.	Date (2020)	Organizer	Topic	Main Guests/Speakers
1.	24th April	School of Commerce and Management	Webinar on Contemporary Issue in Stock Market	Prof. Alok Pandey, Director IMS Ghaziabad (UP), Dr. Amit Kumar Singh, Dept. of Commerce (University of Delhi)
2.	2nd May	School of Commerce and Management	Entrepreneurship, Challenges and Opportunities POST COVID-19	Dr. Ashish Bhatnagar, Faculty Member EDI, Ahmedabad Dr. Rahil Yusuf Zai, IGNTU, Amarkantak Dr. Raj Kumar Singh, School of Management Sciences, Varanasi,Dr. SarojRanjan, VinobaBhave University, Jharkhand
3.	4th May	School of Commerce and Management	How to Stay Positive in Tough Time	Shri. Abhishek Mishra, Deputy Manager HR, HPCL Mittal Energy Ltd. , Noida, Prof. TriptiBarthwal, Director LBSIMDS, Lucknow (UP)
4.	6th May	School of Commerce and Management	Environment and Sustainable Development	Dr. Naveen Kumar Sharma, Professor, Indira Gandhi National Tribal Universisty., Dr. Shiv Pratap Singh, Principal Scientist, Department of Agriculture Engineering, IARI, Pusa, New Delhi, Dr. Virendra K. Mishra IESO, BHU
5.	9th May	School of Commerce and Management	National Webinar on Corona Crises, Agriculture & Dairy : Issues, Challenges, and Opportunities	Dr. Omveer Singh, Manging Director NDDB Dairy Services, New Delhi, Mr.Sudhir K Singh, Managing Director Jharkahand State Milk Federation Ltd. , Ranchi, Mr. S.V. Chaudhary Managing Director SUMUL Diary, SuratGujraat, Shri Asit Sharma Chief Executive Office, Verka Plant Hoshiarpur, Punjab, Mr. SandipAntil General Manager, BapudhamMilk Producer Company Ltd., Motihari, Bihar, Prof. Ngendra K Singh Director National Institutes of Plant Biotechnology IARI Pusa, New Delhi
6.	12th may	School of Commerce and Management	E- Learning: Challenges and Opportunities	Prof. Alok Kumar Chakarwal, Dept. of Commerce and Business Administration, Saurashtra University, Gujarat Prof. D.B. Singh , Director, Rajarshi School of Management and Technology, Varanasi Prof. BijayBhujabal , Director, school of Management, Centurion University of Technology and Management, Odisha Prof. Ripudaman Gaur , G.L Bajaj Institute of Management and Technology, Greater Noida
7.	16th May	School of Commerce and Management	Indian Economy: Challenges And Opportunities POST COVID 19	Prof. Alok Kumar Chakarwal, Dept. of Commerce and Business Administration, Saurashtra University, Gujarat Prof. D.B. Singh , Director, Rajarshi School of Management and Technology, Varanasi Prof. BijayBhujabal , Director, school of Management, Centurion University of Technology and Management, Odisha Prof. Ripudaman Gaur , G.L Bajaj Institute of Management and Technology, Greater Noida
8.	17th May	Department of Media Studies	कोरोनाकाल में पत्रकारिता की रचनात्मक विधाएँ और इसका लेखन विषय पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी	Prof. B.K Kuthiala, President Haryana State Higher Education Council Prof. K.G Suresh Senior Journalist, Former DG, IIMC Former DG, IIMC, Columnist & Communication Specialist. Prof. Kumud Sharma Department of Hindi, Delhi University
9.	24th May	School of Commerce and Management	Aatmnirbhar Bharat : AvsarEvamChunautiyaan	Padamshree Ashok Bhagat Secretary, VikasBharati, Bishnupur, Jharkhand Professor T.N. Singh VC, Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth, Varanasi Professor Dharmendra Singh Sengar Indian Institute of Management, Lucknow
10.	21st May	Department of Library & Information Science	Theme: Library & Information Science in the context of Changing Environment 3 experts from abroad and 15 from different parts of India.	Dr. WalidGhali, Director, Aga Khan Library, London, UK , Lance M. Verner, Director, Kent District Library,Michigan, USA Kylie Carlson, Coordinator, Yarra Libraries, Australia
11.	22nd May	Department of Library & Information Science	Concept of Information Generation, Storage and Processing: with a special reference to traditional pattern of Index and Indexing Techniques	Prof. K. L. Mahawar Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow
12.	23rd May	Department of Library & Information Science	Using Qualitative Research and Narratives in LIS	Dr. Durga Murari SNDT Women's University Mumbai
13.	24th May	Department of Media Studies	कोरोनाकाल में सोशल मीडिया की विश्वसनीयता का संकटऔर उसका समाधान	Dr. Sachidanand Joshi, Member Secretary Indira Gandhi National Centre of Arts (IGNCA) Shri Uday Sinha Editor, Amar Ujala ShrimatiMeenakshiShyoran Anchor, DD News, Delhi
14.	25th May	Department of Library & Information Science	How to Showcase Your Research Outputs/ Publications on Academic Social Media & Institutional Repositories.	Prof. Manoj Kumar Sinha Assam University, Silchar

Webinars

S.No.	Date (2020)	Organizer	Topic	Main Guests/Speakers
16.	26th May	Department of Hindi	*Mahamari, Sahitya Evam Samaj*	Prof. Rajneesh Kumar Shukla VC, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha Prof. Nand Kishore Pandey Director, Kendriya Hindi Sansthan, Agra Prof. Sheoraj SinghBaichain Department of Hindi, University of Delhi Shri Tejendra Sharma Noted Writer-Actor-Director Katha,UK
17.	27th May	Department of Library & Information Science	*Research Reporting and Plagiarism* *Fusion of Technologies with Libraries*	Prof. Amritpal Kaur Guru Nanak Dev University, Punjab Prof. Aditya Tripathi BHU, Varanasi
18.	28th May	Department of Library & Information Science	*Reference Management Using Mendeley Software.*	Dr. Sunil Goria Central Library, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow
19.	29th May	Department of Library & Information Science	*Reference Management Tools.*	Dr. M. Vijaya Kumar Central University of Rajasthan, Ajmer, Rajasthan
20.	29th May	Department of Commerce	*Labour Reforms in Changing Environment of India*	Shri Anupam ji, Social Thinker, Organising Secretary, BMS, North West Region, Shri Kuldeep Pati Tripathi Additioal Advocate General, U.P
21.	29th May	Department of Gandhian and Peace Studies	Challenges to Peace in Covid-19 Period: Solutions from Gandhian Perspective	Prof. Vidya Jain Former Director, Centre of Gandhian Studies, University of Rajasthan Prof. Anurag Gangal Director, Gandhian Centre for Peace and Conflict Studies, Univeristy of Jammu
22.	30th May	Department of Library & Information Science	Mechanisms of Scholarly Writing	Dr. R. Sevukan Deptt. of Library and Information Science, Pondicherry University
23.	29th May	Department of Media Studies	*हिंदी पत्रकारिता के संवर्धन में प्रौद्योगिकी की भूमिका*	Shri Achyutanand Mishra Former VC, MakhanlalChaturvediRashtriyaPatrakaritaEvam Sanchar Vishwavidyalaya, Bhopal Shri Teer Vijay Singh Editor, Dainik Hindustan, Lucknow Shri ShyamKishore Sahay Editor, Lok Sabha TV
24.	31st May	Department of Media Studies	*वर्तमान में समाचार प्रस्तोता की चुनौतियां*	Shrimati Smita Sharma TV Anchor Shri Ashok Shrivastava Anchor, D.D National, New Delhi
25.	1st June	Department of Library & Information Science	A practice with Reference Management	Dr. Gopalkumar Velayudhan Pillai Goa University, Goa
26.	2nd June	Department of Library & Information Science	Working in Metric Structure: Sharing Experiences of Koha Librarianship to handling a Distance Learning Centre	Dr. Meenal Oak Librarianand Cordinator IGNOU, Study Centre Pune, Maharashtra
27.	3rd June	Department of Library & Information Science	Professional Ethics.	Prof. Shilpi Verma Deptt. of Library and Information Science, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow
28.	4th June	Department of Library & Information Science	Electronic Resources.	Dr. Lallaisangzuali Central Library, Mizoram University, Aizawl, Mizoram
29.	4th June	Department of Management Sciences, MGCUB and SikshaSanskritiSansthanNyas, Bihar	Management Education in Indian context (PrabhandanSikshamein-BhartiyaDristi)	Prof. Raj Kumar Vice, chancellor. Punjab university Shri Atual Kothari Secretary,SikshaSanskritiSansthanNyas , New Delhi Prof. P.N. Mishra National president (management education), SikshaSanskritiSansthanNyas , new Delhi
30.	5th June	Department of Library & Information Science	Information Retrieval System	Prof. V.P. Khare Deptt. of Library and Information Science, Bundelkhand University, Jhansi
31.	6th June	Department of Media Studies	*कोरोना काल में उच्च शिक्षा की चुनौतियां एवं समाधान*	Prof. Kuldeep Chand Agnihotgri VC, Central University of Himachal Pradesh Prof. Nand Kumar Yadav Indu VC, Jharkhand Central University Prof. S.P Bansal VC, Himachal Pradesh Technical University Prof. Manjula Rana HemwatiNandanBahugunaGarhwal University, Srinagar
32.	7th June	PR Cell	Relevance of Mahamana Thoughts in Current Corona Crisis	Justice Girdhar Malviya Chancellor, BHU Shri Hari Shankar Singh Secretary, Mahamana Malviya Mission Prof. R.S Dubey VC, Central University of Gujarat

Social Media #MGCUB:
A platform generating knowledge and content
A bridge connecting #MGCUB Fraternity in times of 'physical distancing'

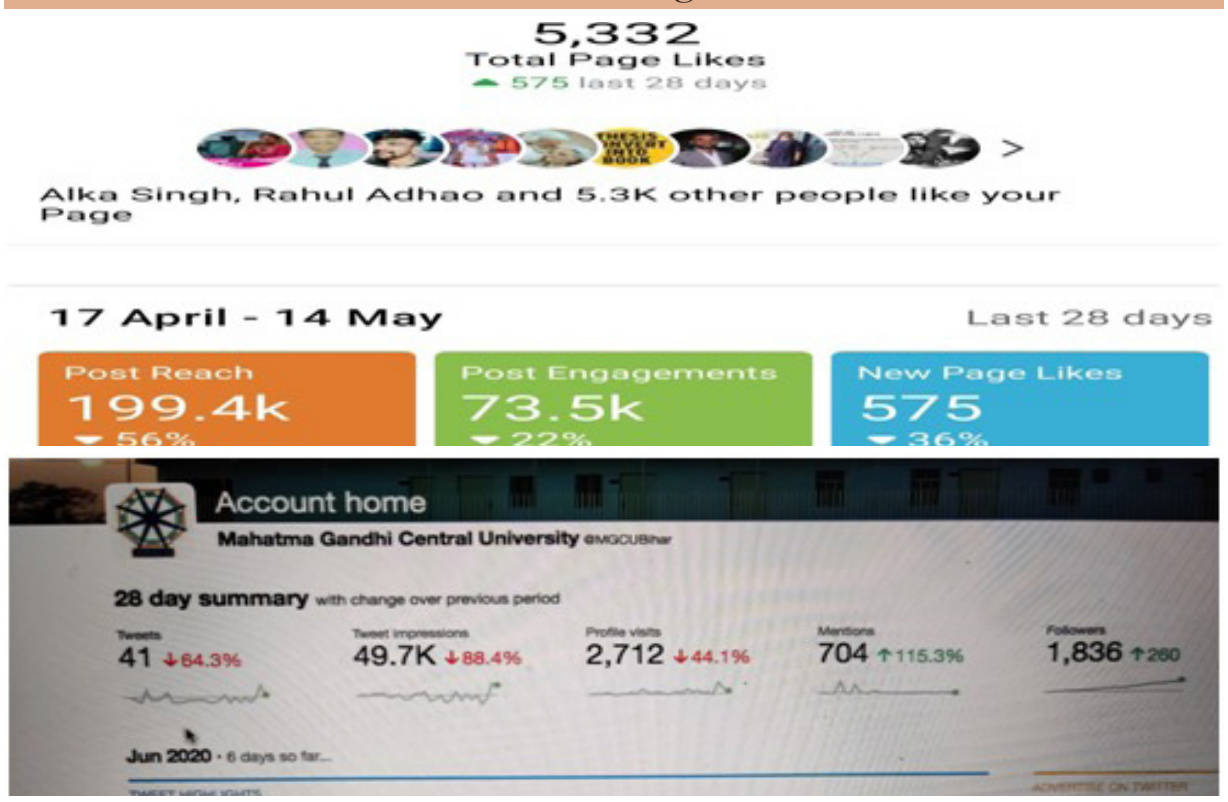

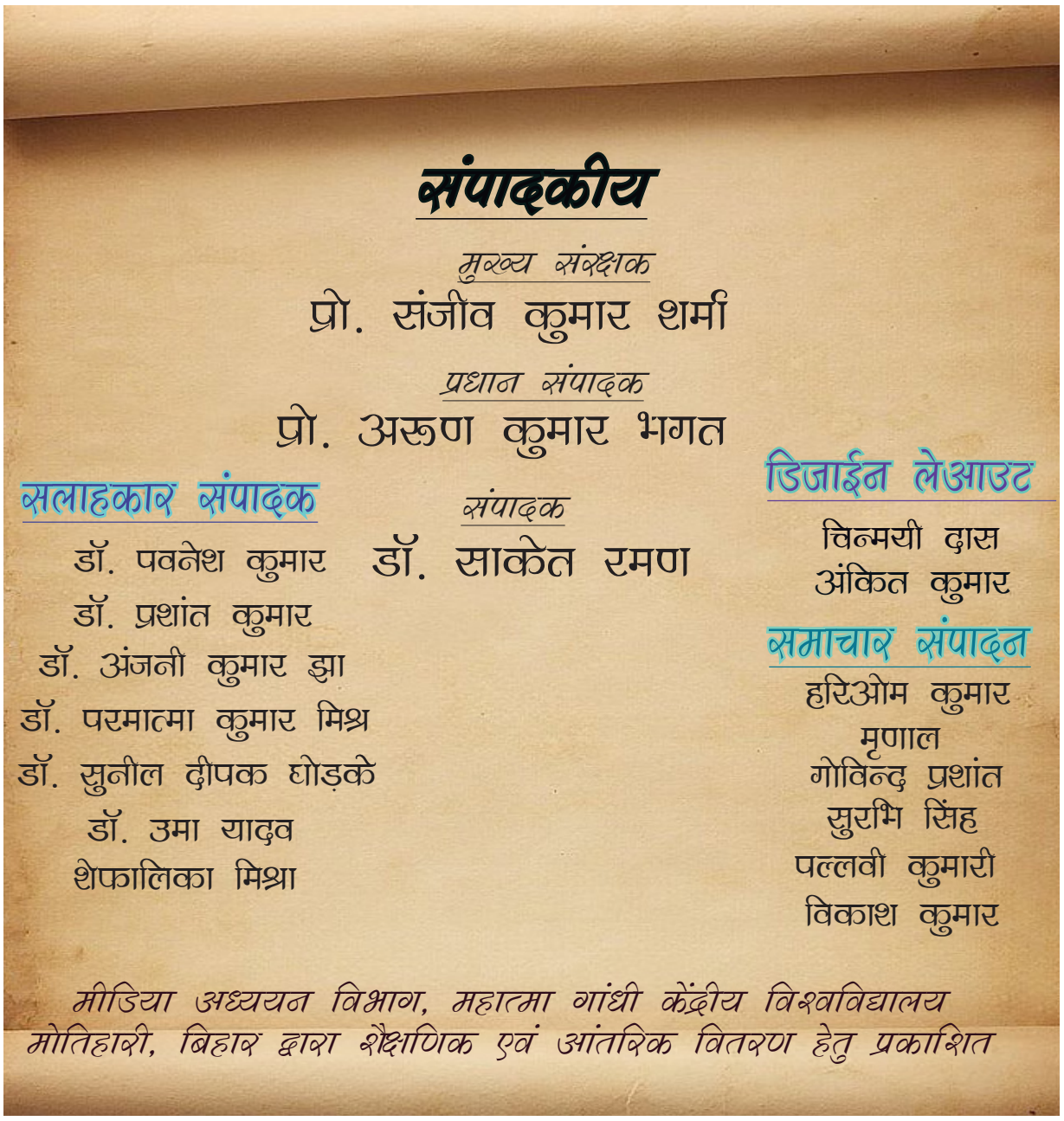

संपादकीय

मुख्य संरक्षक

प्रो. संजीव कुमार शर्मा

प्रधान संपादक

प्रो. अरूण कुमार भगत

सलाहकार संपादक

डॉ. पवनेश कुमार

डॉ. प्रशांत कुमार

डॉ. अंजनी कुमार झा

डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र

डॉ. सुनील दीपक घोड़के

डॉ. उमा यादव

शेफालिका मिश्रा

संपादक

डॉ. साकेत रमण

डिजाईन लेआउट

चिन्मयी दास

अंकित कुमार

समाचार संपादन

हरिओम कुमार

मृणाल

गोविन्द प्रशांत

सुरभि सिंह

पल्लवी कुमारी

विकाश कुमार

मीडिया अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार द्वारा शैक्षणिक एवं आंतरिक वितरण हेतु प्रकाशित

E-Gyan Series: 'E'=Electronic 'Gyan'=Knowledge

The Vice Chancellor Prof. Sanjeev Kumar Sharma inaugurated the "E-Gyan Series" on 6 May 2020. Under "E-Gyan Series", envisioned and organised by the Department of Commerce, Mahatma Gandhi Central University, various online lectures were organised on a wide spectrum of topics related to the discipline of commerce and contemporary issues using Google Meet platform. Undergraduate & Postgraduate Graduate students of the Department of Commerce and Department of Management Sciences greatly benifited from the lecture series. Research scholars of both the departments also actively attended the online lectures.

S.No.	Date 2020	Keynote Speaker	Topic
1.	6th May	Prof. Manas Pandey Ex Dean, Faculty of Management Studies, V.B.S. Purvanchal University, Jaunpur, U.P.	How to Prepare Yourself for Research
2.	8th May	Prof. Tulika Saxena, Department of Business Administration, MJPRU, Bareilly	Changing Issues in HRM
3.	9th May	Prof. J. K. Sharma, Dean, Faculty of Commerce and Management, MDU (Regional Centre, Palwal) Rohtak	Values and Ethics in Research
4.	11th May	Prof. Audhesh Kumar Lucknow University, Lucknow	Corporate Social Responsibility
5.	13th May	Shri S. P. Singh Rtd. DGM Punjab National Bank	Emerging Issues in Banking Industry
6.	15th May	Prof. Ved Prakash Kumar Former CEO, Vedanta Consultancy Group	Aftermath on Industries in India
7.	16th May	Prof. Sanjay Kr. Bhardwaj JNU, Delhi	International Relations

E Vimarsh- Power Point Presentations

S.No.	Name of the Department	Number of PPTS
1.	Department of Commerce	46
2.	Department of Management Sciences	51
3.	Department of Computer Science & Information Technology	50
4.	Department of English	46
5.	Department of Hindi	55
6.	Department of Biotech & Genome	42
7.	Department of Botany	44
8.	Department of Zoology	62
9.	Department of Mathematics	47
10.	Department of Physics	84
11.	Department of Chemistry	53
12.	Department of Economics	58
13.	Department of Educational Studies	40
14.	Department of Gandhian & Peace Studies	33
15.	Department of Library & Information Sciences	37
16.	Department of Social Work	50
17.	Department of Political Science	49
18.	Department of Sociology	41
19.	Department of Media Studies	49
20.	Department of Sanskrit	56
Total	**Total**	**993**